पहला अंक

कौरव नगरी

तीन बार तूर्यनाद के उपरान्त

कथा-गायन

टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा
उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है
पाण्डव ने कुछ कम कौरव ने कुछ ज़्यादा
यह रक्तपात अब कब समाप्त होना है
यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है
अन्धों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों ने विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अन्धापन
भय का अन्धापन, ममता का अन्धापन
अधिकारों का अन्धापन जीत गया
जो कुछ सुन्दर था, शुभ था, कोमलतम था
वह हार गया... द्वापर युग बीत गया
(पर्दा उठने लगता है)
यह महायुद्ध के अंतिम दिन की संध्या
है छाई चारों ओर उदासी गहरी
कौरव के महलों का सुना गिलयारा
हैं घूम रहे केवल दो बूढ़े प्रहरी
[*पर्दा उठाने पर स्टेज खाली है। दाई और बाई ओर बरछे और ढाल लिए दो प्रहरी हैं जो वार्तालाप करते हुए स्टेज के आर-पार चलते हैं*]

प्रहरी १ थके हुए हम,
पर घूम-घूम पहरा देते हैं
इस सूने गलियारे में

प्रहरी २ सूने गलियारे में
जिसके इन रत्न-जटित फ़र्श पर
कौरव-वधुएँ
मंथर-मंथर गति से
सुरभित पवन-तरंगों-सी चलती थीं
आज वे विधवा हैं !

प्रहरी १. थके हुए हम,
इसलिए नहीं कि
कहीं युद्धों में हमने भी
बाहुबल दिखाया है
प्रहरी थे हम केवल
सत्रह दिनों के लोमहर्षक संग्राम में
भाले हमारे ये,
ढालें हमारी ये,
निरर्थक पड़ी रहीं
अंगों पर बोझ बनी
रक्षक थे हम केवल ***1**
लेकिन रक्षणीय कुछ भी नहीं था यहाँ

प्रहरी २. रक्षणीय कुछ भी नहीं था यहाँ...
संस्कृति थी यह एक बूढ़े और अन्धे की
जिसकी सन्तानों ने
महायुद्ध घोषित किये,
जिसके अन्धेपन में मर्यादा
गलित अंग वेश्या-सी
प्रजाजनों को भी रोगी बनाती फिरी
उस अन्धी संस्कृति,
उस रोगी मर्यादा की
रक्षा हम करते रहे
सत्रह दिन।

प्रहरी १. जिसने अब हमको थका डाला है
मेहनत हमारी निरर्थक थी
आस्था का,
साहस का,
भ्रम का,
अस्तित्व का हमारे
कुछ अर्थ नहीं था *2
कुछ भी अर्थ नहीं था

प्रहरी २. अर्थ नहीं था
कुछ भी अर्थ नहीं था
जीवन के अर्थहीन
सूने गलियारे में
पहरा दे-देकर
अब थके हुए हैं हम
अब चुके हुए हैं हम
[*चुप होकर वे आर-१-२पार घूमते हैं। सहसा स्टेज पर प्रकाश धीमा हो जाता है। नेपत्य से आँधी की-सी ध्वनि आती है। एक प्रहरी कान लगा कर सुनता है, दूसरा भौंहों पर हाथ रख कर आकाश की ओर देखता है।*]

प्रहरी १. सुनते हो
कैसी है ध्वनि यह
भयावह ?

प्रहरी २. सहसा अँधियारा क्यों होने लगा
देखा तो
दीख रहा है कुछ ?

प्रहरी १. अन्धे राजा की प्रजा कहाँ तक देखे?
दीख नहीं पड़ता कुछ
हाँ, शायद बादल है
[*दूसरा प्रहरी भी बगल में आकर देखता है और भयभीत हो उठता है*]

प्रहरी २. बादल नहीं है
ये गिद्ध हैं
लाखों-करोड़ों
पाँखें खोले

[*पक्षों की ध्वनि के साथ स्टेज पर और भी अँधेरा*]
प्रहरी १. लो
सारी कौरव नगरी
का आसमान
गिद्धों ने घेर लिया
प्रहरी २. झुक जाओ
झुक जाओ
ढालों के नीचे
छिप जाओ
नरभक्षी हैं ये गोद्ध भूखे हैं।
[*प्रकाश तेज़ होने लगता है*]
प्रहरी १. लो ये मुड़ गए
कुरुक्षेत्र की दिशा में
[*आँधी की ध्वनि कम हो जाती है*]
प्रहरी २. मौत जैसे
ऊपर से निकल गई
प्रहरी १. अशकुन है
भयानक यह ।
पता नहीं क्या होगा
कल तक
इस नगरी में
[*विदुर का प्रवेश, बाईं ओर से*]
प्रहरी १. कौन है ?
विदुर. मैं हूँ
विदुर
देखा धृतराष्टर ने?
देखा यह भयानक दृश्य?
प्रहरी १. देखेंगे कैसे वे?
अन्धे हैं ।
कुछ भी क्या देख सके
अब तक
वे? *3
विदुर. मिलूँगा उनसे मैं
अशकुन भयानक है
पता नहीं संजय
क्या समाचार लाए आज?
[*प्रहरी जाते हैं, विदुर अपने स्थान पर चिन्तातुर खड़े रहते हैं। पीछे का पर्दा उठने लगता है*]
है कुरुक्षेत्र से कुछ भी खबर न आई
जीता या हारा वचा-खुचा कौरव-दल
जाने किसकी लोथों पर जा उतरेगा
यह नरभक्षी गिद्धों का भूखा बादल
अन्तःतुर में मरघट की-सी खामोशी
कृश गान्धारी बैठी है शीश झुकाए
सिंहासन पर धृतराष्ट्र मौन बैठे हैं
संजय अब तक कुछ भी संवाद न लाए

[*पर्दा उठने पर अन्तःपुरं कुशासन बिछाए सादी चौकी पर गान्धारी, एक छोटे सिंहासन पर चिन्तातुर धृतराष्ट्र। विदुर उनकी ओर बढ़ते हैं*]
धृतराष्ट्र. कौन, संजय ?
विदुर. नहीं !
विदुर हूँ
महाराज !
विह्वल है सारा नगर आज
बचे-खुचे जो भी दस-बीस लोग
कौरव नगरी में हैं
अपलक नेत्रों से
कर रहे प्रतीक्षा हैं
संजय की । *4
[*कुछ क्षण महाराज के उत्तर की प्रतीक्षा में*]
महाराज
चुप क्यों हैं इतने
आप?
माता गान्धारी भी मौन हैं !
धृतराष्ट्र. विदुर !
जीवन में प्रथम बार
आज मुझे आशंका व्यापी है ।
विदुर. आशंका ?
आपको जो व्यापी है आज
वह वर्षों पहले हिला गई थी सब को
धृतराष्ट्र. पहले पर कभी भी तुमने यह नहीं कहा
विदुर. भीष्म ने कहा था,
गुरु द्रोण ने कहा था,
इसी अन्तःपुर में
आकर कृष्ण ने कहा था –

'मर्यादा मत तोड़ो
तोड़ी हुई मर्यादा
कुचले हुए अजगर-सी
गुंजलिका में कौरव वंश को लपेटकर
सूखी लकड़ी-सा तोड़ डालेगी'

धृतराष्ट्र. समझ नहीं सकते हो
विदुर तुम।
मैं था जन्मान्ध ।
कैसे कर सकता था
ग्रहण मैं
बाहरी यथार्थ या सामाजिक मर्यादा को?
विदुर. जैसे संसार को किया जा सकता ग्रहण
अपने
अन्धेपन
के बावजूद *5
धृतराष्ट्र. पर वह संसार
स्वतः अपने अन्धेपन से उपजा था।

मैंने अपने ही वैयक्तिक संवेदन से जो जाना था
केवल अपना ही था मेरे लिए वस्तु-जगत इद्रजाल की
माया-सृष्टि के समान
घने गहरे अंधियारे में
एक काले बिन्दु से
मेरे मन ने सारे भाव किये थे विकासित
मेरी सब वृत्तियां उसी से परिचालित थीं
मेरा स्नेह, मेरी घृणा, मेरी नीति, मेरा धर्म
बिलकुल मेरा ही वैयक्तिक था
उसमें नैतिकता का कोई बाह्य मापदंड था ही नहीं
कौरव जो मेरे मांसलता से उपजे थे
वे ही थे अंतिम सत्य
मेरी ममता ही वहाँ नीति थी,
मार्यादा थी।
विदुर. पहले ही दिन से किंतु
आपका वह अंतिम सत्य
-- कौरवों का सैनिक बल--
होने लगा था सिद्ध झूठा और शक्तिहीन
पिछले सत्रह दिन से
एक-एक कर
पूरे वंश के विनाश का
संवाद आप सुनते रहे
धृतराष्ट्र. मेरे लिए वे संवाद सब निरर्थक थे
मैं हूं जन्मान्ध
केवल सुन ही तो सकता हूं
संजय मुझे देते हैं केवल शब्द
उन शब्दों से जो आकार-चिन्ह बनते हैं
उनसे मैं अब तक अपरिचित हूं
कल्पित कर सकता नहीं
कैसे दुःशासन की आहत छाती से
रक्त उबल रहा हागा,
कैसे क्रूर भीम ने अँजुली में
धार उसे
ओठ तर किए होंगे ।
[*कानों पर हाथ रखकर*]
गान्धारी. महाराज ।
मत दोहराये वह
सह नहीं पाऊँगी
[सब क्षण भर चुप]
धृतराष्ट्र. आज मुझे भान हुआ ।
मेरी वैयक्तिक सीमाओं के बाहर भी
सत्य हुआ करता है
आज मुझे भान हुआ ! ....
सब कुछ बह गया
मेरे अपने वैयक्तिक मुल्य
मेरे निश्चिन्त किंतु ज्ञानहीन आस्थाएँ ।
विदुर. यह जो पीड़ा ने
पराजय ने
दिया है ज्ञान,
दृढ़ता ही देगा वह।
धृतराष्ट्र. किन्तु, इस ज्ञान ने
भय ही दिया है विदुर!
जीवन में प्रथम बार
आज मुझे आशंका व्यापी है ।
विदुर. भय है तो
ज्ञान है अधूरा अभी।
प्रभू ने कहा था यह...
'ज्ञान जो समर्पित नहीं है
अधूरा है
मनोबुद्धि तुम अर्पित कर दो
मुझे !
भय से मुक्त होकर
तुम प्राप्त मुझे ही होगे
इसमें संदेह नहीं।'
गन्धारी. [*आवेश से*]
इसमें संदेह है
और किसी को मत हो
मुझको है ।
'अर्पित कर दो मुझको मनोबुद्धि'
उसने कहा है यह
जिसने पितामह के वाणों से
आहत हो अपनी सारी ही
मनोबुद्धि खो दी थी ?
उसने कहा है यह,
जिसने मर्यादा को तोड़ा है बार-बार ?
धृतराष्ट्र. शान्त रहो
शान्त रहो,
गान्धारी शान्त रहो.
दोष किसी को मत दो ।
अन्धा था मैं...
गान्धारी. लेकिन अन्धी नहीं थी मैं।
मैंने वह बाहर का वास्तु-जगत अच्छी तरह जाना था
धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब है केवल आडम्बर मात्र
मैंने यह बार-बार देखा था ।
निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा
व्यर्थ सिद्ध होते हैं सदा
हम सब के मन में कहीं एक अन्ध गहवर है ।
बर्बर पशु, अन्ध पशु वास वहीं करता है,
स्वामी जो हमारे विवेक का,
नैतिक्तता, मर्यादा, अनासक्ति, कृष्णार्पण
यह सब है अन्धी प्रवृत्तियाओं की पोशाकें
जिनमें कटे कपड़ों की आँखें सिली रहती हैं
मुझको इस झूठे आडम्बर से नफ़रत थी

इसलिए स्वेच्छा से मैंने इन आंखों पर पट्टी चढ़ा रखी थी

विदुर – कटु हो गई हो तुम
गान्धारी !
पुत्रशोक ने तुमको अन्दर से
जर्जर कर डाला है !
तुम्हीं ने कहा था
दुर्योधन से ...

गान्धारी. मैंने कहा था दुर्योधन से
धर्म जिधर होगा ओ मूर्ख !
उधर जय होगी !
धर्म किसी ओर नहीं था । लेकिन
सब ही थे अन्धी प्रवृत्तियों से परिचालित,
जिसको तुम कहते हो प्रभू
उसने जब चाहा
मर्यादा को अपने ही हित में बदल लिया ।
वंचक है ।

धृतराष्ट्र. शान्त रहो गान्धारी ।

विदुर. यह कटु निराशा की
उद्धत अनास्था है ।
क्षमा करो प्रभू !
यह कटु अनास्था भी अपने
चरणों में स्वीकार करो !
आस्था तुम लेते हो
लेगा अनास्था कौन ?
क्षमा करो प्रभू !
पुत्र-शोक से जर्जर माता हैं गान्धारी ।

गानधारी. माता मत कहो मुझे
तुम जिसको कहते हो प्रभू
वह भी मुझे माता ही कहता है ।
शब्द यह जलते हुए लोहे की सलाखों-सा
मेरी पसलियों में धंसता है ।
सत्रह दिन के अन्दर
मेरे सब पुत्र एक-एक कर मारे गए
अपने इन हाथों से
मैंने उन फूली-सी वधुओं की कलाइयों से
चूड़ियाँ उतारी हैं
अपने इस आँचल से
सेंदूर की रेखाएँ पोंछी हैं ।

[*नेपत्य से*]
जय हो
दुर्योधन की जय हो ।
गान्धारी की जय हो ।
मंगल हो,
नरपति धृतराष्ट्र का मंगल हो।

धृतराष्ट्र. देखो ।
विदुर देखो ! संजय आए ।

गान्धारी. जीत गया
मेरा पुत्र दुर्योधन
मैंने कहा था
वह जीतेगा निश्चय आज ।

[*प्रहरी का प्रवेश*]

प्रहरी. याचक है महाराज !

[*याचक का प्रवेश*] एक वृद्ध याचक है ।

विदुर. याचक है?
उन्नत ललाट
श्वेतकेशी
आजानुबाहु ?

याचक. मैं वह भविष्य हूँ
जो झूठा सिद्ध हुआ आज
कौरव की नगरी में
मैंने मापा था, नक्षत्रों की गति को
उतारा था अंकों में ।
मानव-नियति के
अलिखित अक्षर जाँचे थे ।
मैं था ज्योतषी दूर देश का।

धृतराष्ट्र. याद मुझे आता है
तुमने कहा था कि द्वन्द्व अनिवार्य है
क्योंकि उससे ही जय होगी कौरव-दल की।

याचक. मैं हूँ वही
आज मेरा विज्ञान सब मिथ्या ही सिद्ध हुआ।
सहसा एक व्यक्ति
ऐसा आया जो सारे
नक्षत्रों की गति से भी ज़्यादा शक्तिशाली था
उसने रणभूमि में
विषादग्रस्त अर्जुन से कहा –
'मैं हूँ परात्पर।
जो कहता हूँ करो
सत्य जीतेगा
मुझसे लो सत्य, मत डरो ।'

विदुर. प्रभू थे वे !

गान्धारी. कभी नहीं !

विदुर. उनकी गति में ही
समाहित हैं सारे इतिहासों की,
सारे नक्षत्रों की दैवी गति ।

याचक. पता नहीं प्रभू हैं या नहीं
किन्तु उस दिन यह सिद्ध हुआ

जब कोई भी मनुष्य
अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को
उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है ।
नियति नहीं है पूर्वनिर्धारित –
उसको हर क्षण मानव-निर्णय बनाता-मिटाता है
गान्धारी. प्रहरी, उसको एक अंजुल मुद्राएँ दो।
तुमने कहा है –
'जय होगी दुर्योधन की।'
याचक. मैं तो हूँ झूठा भविष्य मात्र
मेरे शब्दों का इस वर्तमान में
कोई मूल्य नहीं
मेरे जैसे
जाने कितने झूठे भविष्य
बिखरे हैं कौरव नगरी में
गली-गली ।
माता हैं गान्धारी
ममता में पाल रही हैं सब को
[*प्रहरी मुद्राएँ लाकर देता है*]
जय हो दुर्योधन की
जय हो गान्धारी की [*जाता है*]
गान्धारी. होगी,
अवश्य होगी जय !
मेरी यह आशा
यदि अन्धी है तो हो
पर जीतेगा दुर्योधन जीतेगा।
विदुर. दूब गया दिन...
धृतराष्ट्र. पर
संजय नहीं आए
लौट गए होंगे
सब योद्धा अब शिविर में
जीता कौन ?
हारा कौन ?
विदुर. महाराज !
संशय मत करें ।
संजय जो समाचार लाएँगे शुभ होगा
माता अब जाकर विश्राम करें !
नगर-द्वार अपलक खुले ही हैं
संजय के रथ की प्रतीक्षा में
[*जाते हैं. प्रहरी पुनः स्टेज पर घूमने लगते हैं*]
प्रहरी १. मर्यादा !
प्रहरी २. अनास्था !
प्रहरी १. पुत्रशोक !
प्रहरी २. भविष्यत !
प्रहरी १. ये सब
राजाओं के जीवन की शोभा है ।
प्रहरी २. वे जिनको ये सब प्रभू कहते हैं
इस सब को अपने ही जिम्मे ले लेते हैं ।
प्रहरी १. पर यह जो हम दोनों का जीवन
सूने गलियारे में बीत गया
प्रहरी २. कौन इसे
अपने जिम्मे लेगा ?
प्रहरी १. हमने मर्यादा का अतिक्रमण नहीं किया,
क्योंकि नहीं थी अपनी कोई भी मर्यादा ।
प्रहरी २. हमको अनास्था ने कभी नहीं झकझोरा
क्योंकि नहीं थी अपनी कोई भी गहन आस्था
प्रहरी १. हमने नहीं झेला शोक
प्रहरी २. जाना नहीं कोई दर्द
प्रहरी १. सूने गलियारे-सा सूना यह जीवन भी बीत गया ।
प्रहरी २. क्योंकि हम दास थे
प्रहरी १. केवल वहन करते थे आशाएँ हम अन्धे राजा की
प्रहरी २. नहीं था हमारा कोई अपना खुद का मत
कोई अपना निर्णय ।
प्रहरी १. इसलिए सूने गलियारे में
निरुद्देश्य,
निरुद्देश्यि,
चलते हम रहे सदा
दायें से बायें,
और वायें से दायें
प्रहरी २. मरने के बाद भी
यम के गलियारे में चलते रहेंगे सदा
दायें से बायें और वायें से दायें

vocabulaire de l'acte I *Andhâ Yug (*1954) pièce en 5 actes de Dharam Vîr Bhâratî (1926-97) Acte 2 : l'émergence de la bête ; 3 la semi-vérité d'Ashwathama ; 4 la malédiction de Gandhari ; 5 la victoire, lent suicide, épilogue : la mort du Seigneur

वार्तालाप m. dialogue, रक्तपातः flot (chute : pât) de sang (rakta), अँधापन ou अँधेपन, m. aveuglement, cécité, ténèbres, कोमलतम très doux (superlatif en –*tama*), ममता f. tendresse, affection, विवेक m. discernement, intelligence, शोभित adj. éclatant (शोभा f. éclat, aura), संध्या f. soir, पहरा garde, vigile, प्रहरी m. sentinelle, छाना recouvrir, हारना perdre, जीतना vaincre, बरछा m épée, cf. भाला, ढाल f. bouclier, गलियारा m. corridor, रत्न-जटित incrusté, मंथर-मंथर gracieusement, सुरभित-पवन-तरंग parfumé-vent-vague (brise parfumé : composé sanscrit typique de la poésie traditionnelle), बाहुबल m. force physique, लोम poil, लोमहर्षक· qui fait dresser les poils, रक्षक· m. défenseur, रक्षणीय adj, digne d'être défendu, गलित adj, fondu, dissolu, अस्तित्व m. existence· · सूना· adj. désert, आस्था· f. foi, ध्वनि f. écho, आँधी f. tempête, ouragan, श्रम· m. labeur, भौह· m. sourcil, भयभीत· adj. épouvanté, effrayé, भयानह· · भयानक· · ffrayant, गिद्ध· m. vautour, अंतःपुर· m. gynécée, नरभक्षी mangeur (*bhaksh*-i) d'hommes (*nar*), लोथ· m. cadavre, morceau de chair, बचा-खुचा restes, सिंहासन· m. trône, विह्वल· adj, agité, tourmenté, पलक f paupière, अशकुन adj de mauvais augure, कृश· · dj (skr) émacié, कुचलना écraser, fouler aux pieds, गंजलक, गंजलिका· anneau du serpent, आशंका m. peur,
संवेदन· · · · · · · · · · · · · , ग्रहण करना saisir, घना adj. dense, इद्रजाल piège des sens -illusion, उपजना naître, être généré, घृणा f. haine, वैयक्तिक adj. individuel, संवाद m. signal, information, परिचित adj. connu, familier, वृत्ति f. tendance, inclination, वाहय मापदंड m. critère extérieur, कल्पित करना imaginer, concevoir, आहत adj. blessé, छाती f. poitrine, निरर्थक adj. insignifiant (*nir*+ *arth*, sens) क्रूर adj. cruel, अंजुली f. mains en coupe, भान (*hona*) savoir, ressentir, être conscient, पराजय f. défaite, अनुमान m. estimation, जग, जगत m. univers /monde, मनोबुद्धि esprit-pensée, कोटी catégorie, niveau, समर्पित / अर्पित consacré, निर्णय m. décision, व्यर्थ adj. inutile, पोशाक f. vêtement, बर्बर adj. féroce पशु m. animal, bête, अनासक्ति f. détachement, स्वेच्छा sva+ iccha, de plein gré, qui agit librement, पट्टी f. bandeau, कटु adj. amer (कट्टा), शोक m. chagrin, उद्धत adj. insolent, जर्जर adj. détruit, वंचक adj. salaud, traître, आडंबर hypocrisie, illusion, निराशा désespoir, क्षमा f. pardon, धंसना être enfoncé, पसलियाँ f. côtes, कलाई f. poignet, सेंदूर = सिंदूर, पोंछना essuyer, नरपति m. commandant en chef (pati représentant > meneur + nar homme), ललाट front, याचक mendiant, उन्नट large, स्वेतकेशी aux cheveux (kesh) blancs (shvet), आजानुबाहु aux longs bras (composé sanskrit), जाँचना vérifier, examiner, रंणभूमि f. champ de bataille, हित m. bénéfice, bien, समाहित rassemblé, चुनीतौ (f. défi) देना défier, पूर्वनिर्धारित prédéterminé, परिचालित adj. conduit, entraîné, मुद्रा f. écu, ध्वस्त effondré, योधा m. guerrier, शिविर m. camp, संशय m. doute, झकझोरना secouer, वहन करना convoyer, véhiculer, आज्ञा f. ordre, निरुद्देश्य, adj. sans but, désemparé (but : uddesh m.), अनिवार्य adj. inévitable, nécessaire, मिथ्या illusoire, द्वंद्व m. conflit

Questions sur la première partie (pp. 1-3) : (S4)

1. Quel est le mot le plus important du chœur ? 2. Etudiez les enchaînements de répliques entre les 2 soldats. 3. traduire *1 en commentant les accords. 4. Remettez dans l'ordre « normal » *2. 5. Quels sont les traits marquants (rythme, ordre, rimes) de *3 ? 6. Qui cite Vidur ? 7. Traduisez *4 en tenant compte de l'ordre. 8. Qui est Gandhari ? 9. Qui est Drona ? 10 Plan de la séquence.

Questions sur la seconde partie de l'acte (pp. 4-6), (S5)

1. Plan de la séquence. 2. Comment comprenez-vous la première réplique de Gandhari ? 3. Pour quelle raison est-elle facteur de malédiction (citez les phrases pertinentes)? 4. Quel est son trait de caractère principal (citations à l'appui) ? 5. Quels sont les mots et formules le plus souvent répétés par Dhritarashthra ? 6. Quel est le trait de sa personnalité le plus important ? 7. Traduisez les trois tirades du mendiant (yâcak)..